कामन्दकीय नीतिसार एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेन्द्र गुर्जर, प्राचार्य
अग्रवाल कन्या महाविद्यालय
गंगापुरसिटी, राजस्थान

सारांश

कामन्दकीय नीतिसार राजनीति का विशिष्ट ग्रन्थ है। नीतिसार के कर्ता कामान्दक का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से उल्लिखित नही है। नीतिसार की सृजनगत महत्ता ने नीतिसार की आचार्य परम्परा में उनका प्रशंसनीय स्थान बना दिया है। यह तो सुस्पष्ट है कि नीतिसार की रचना कौटिलीय अर्थशास्त्र को आधार बना कर की गई है तथा इस रचना में कामन्दक ने स्पष्ट रूप से कौटिल्य को अपना गुरू स्वीकार किया है। डॉ. जाली, विन्टरनितज आदि पाश्चात् विद्वानों ने कामन्दक को 8वीं ई. में स्वीकार किया है। किन्तु यह समय परवर्ती होने से तथ्यहीन जान पडता है क्योकि 8वीं शताब्दी के पूर्व के अनेक ग्रन्थों में कामन्दक एंव उनकी रचना के उल्लेख प्राप्त होते है। धर्मशास्त्र के विद्वानों ने आचार्य शुक्र को गुप्तकालीन माना है। अतः कामन्दक निश्चित ही गुप्तकाल के पूर्व के प्रतीत होते है। डॉ. सदाशिव अल्टेकर ने कामन्दकनीतिसार का रचनाकाल 500 ई. के आस–पास माना है। अतः जहॉ कामन्दक के गुरू कौटिल्य मौयकाल का प्रतिनिधित्व करते है, वहा आचार्य शुक्र गुप्तकाल का। अतः कामन्दक का मौर्यकाल से गुप्तकाल के बीच की अवधि में होना युक्तिसंगत है

मूल शब्द

नीतिसार, कामन्दक, राजा, राज्य, दण्ड, धर्म, रक्षा, सर्ग

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ० बृजेन्द्र गुर्जर, प्राचार्य

कामन्दकीय नीतिसार एक समीक्षात्मक अध्ययन

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 80–85

Article No. 12
http://anubooks.com
?page_id=581

नीतिसार के कर्ता कामान्दक का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से उल्लिखित नही है। नीतिसार की सृजनगत महत्ता ने नीतिसार की आचार्य परम्परा में उनका प्रशंसनीय स्थान बना दिया है। यह तो सुस्पष्ट है कि नीतिसार की रचना कौटिलीय अर्थशास्त्र को आाधार बना कर की गई है तथा इस रचना में कामन्दक ने स्पष्ट रूप से कौटिल्य को अपना गुरू स्वीकार किया है। डॉ. जाली, विन्टरनितज आदि पाश्चात् विद्वानों ने कामन्दक को 8वीं ई. में स्वीकार किया है। किन्तु यह समय परवर्ती होने से तथ्यहीन जान पडता है क्योकि 8वीं शताब्दी के पूर्व के अनेक ग्रन्थों में कामन्दक एंव उनकी रचना के उल्लेख प्राप्त होते है। धर्मशास्त्र के विद्वानों ने आचार्य शुक्र को गुप्तकालीन माना है। अतः कामन्दक निश्चित ही गुप्तकाल के पूर्व के प्रतीत होते है। डॉ. सदाशिव अल्टेकर ने कामन्दकनीतिसार का रचनाकाल 500 ई. के आस–पास माना है। अतः जहॉ कामन्दक के गुरू कौटिल्य मौयकाल का प्रतिनिधित्व करते है, वहा आचार्य शुक्र गुप्तकाल का। अतः कामन्दक का मौर्यकाल से गुप्तकाल के बीच की अवधि में होना युक्तिसंगत है

आचार्य कामन्दक ने नीतिसार के प्रथम सर्ग में अपना परिचय निम्न प्रकार प्रस्तुत किया है –

वंशे विशालवंश्यानामृषीणामिव भूयसाम्।
अप्रतिग्राहकाणां यो बभूव भुवि विश्रुतः।।
जातवेदा इवार्च्चिष्मान् वेदान् वेदान् वेदविदां वरः।
यो धीतवान् सुचतुश्वरो प्येकवेदवत्।
यस्याभिचारवज्रेण वज्रज्वलनतेजसः।
पपात मूलतः श्रीमान, सुपर्वा नन्द पर्वतः
एकाकी मन्त्रशक्त्या यः शक्त्या शक्तिधरोपमः।
आजहार नृचन्द्रया चन्द्रगुप्ताय मेदिनीम्।।
नीतिशास्त्रामृतं धीमानर्थशास्त्रमहोदधेः।
समुदृध्रे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे।।

उक्त लेख के अनुसार कामन्दक लेख को अरना गुरू स्वीकार करते है तथा अपने नीतिग्रन्थ के लेखन से पूर्व उन्होने विष्णुगुप्तप्रणीत अर्थशास्त्र का पर्याप्त अनुशीलन किया है। तत्पश्चात् कामन्दक ने अपने जन्म–स्थान, माता–पिता इत्यादि का उल्लेख नही किया है। कामन्दकीय नीतिसार में पूर्वप्रचलित क्रिया के उद्धरण प्राप्त होते हैं। उनमें मनु, बृहस्पति, इन्द्र, उशना, मय विशालाक्ष, पराशर एंव कौटिल्य का उल्लेख विशेष रूप से हुआ। उक्त सब आचार्यो में कौटिल्य ही कामन्दक के तत्काल पूर्ववर्ती सिद्व होते है। किन्तु कौटिल्य और कामन्दक में द्वितीय दीर्घावधि के अन्तर को देखते हुये विद्वानों ने कामन्दकीय नीतिसार के काल निर्धारण हेतु काफी प्रयास किये है, जो निम्न प्रकार है–

छठी शताब्दी के आचार्य दाण्डी भी अपनी दशकुमारचरित्रम् नामक कृति में कामान्दक एंव उनकी नीति का उल्लेख करते है। अतः कामन्दक छठी शताब्दी के पूर्व के जान पडते है या जाने जा सकते

है। उत्तर गुप्तकाल की रचना शुक्रनीति में कामन्दकीय नीतिसार के अनेक पद्य आदिकाल से उद्धत हुये है। अतः कामन्दकीय नीतिसार ग्रन्थ पुर्वगुप्तकाल की रचना माना जा सकता है। अग्निपुराण एंव मत्स्यपुराण में भी कामन्दकीय नीतिसार के कई श्लोक प्राप्त होते है। विद्वानों ने इन पुराणों का रचनाकाल द्वितीय शताब्दी ईस्वी माना है। इस आधार पर कामन्दकीय नीतिसार को ई. पू. की प्रथम शताब्दी का मानना भी औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

उपरोक्त विभिन्न तर्को के आधार पर कामन्दकीय नीतिसार के स्थिति के सन्दर्भ में कोई निर्णयात्मक स्थिति स्पष्ट नही होती है।

कामन्दकीय नीतिसार राजनीति का विशिष्ट ग्रन्थ है। इसमें भारतवर्ष की पुरातन राजनीति का सांगोपांग चित्रण किया गया है। कामन्दकीय नीतिसार का वर्ण्य–विषय निम्नप्रकार है–

कामन्दकीय नीतिसार के प्रथम सर्ग में मंगलाचरण द्वारा प्रारम्भ करने के उपरान्त राजा की महत्ता तथा राजा एंव प्रजा के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुये प्रजा के लिये दण्ड विधान की उपयोगिता एंव राजा के लिये उसके अनुपालना की बात बलपूर्वक प्रतिपादित की गयी है। न्याय में प्रदत्त राजा को ही दीपक का संरक्षक कहा गया है।

द्वितीय सर्ग के प्रारम्भ में कामन्दक ने राजा के अध्येय चार विषयों – आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति का प्रतिपादन किया है। तदुपरान्त आन्वीक्षिकी को त्रयी का अंग मानते हुये वार्ता एंव दण्यनीति का सामान्य परिचय प्रदान कर चारों के स्वरूप को प्रतिपादित किया। तदनुसार आन्वीक्षिकी से आत्मा का, त्रयी से धर्म एंव अधर्म का, वार्ता से अर्थ एंव अनर्थ का लक्ष्य दण्डनीति से नीति एंव अनीति का ज्ञान होना स्पष्ट किया हैं। इस सब में दण्ड नीति के प्रभाव को स्वीकार करते हुये राजा में उसकी आवश्यकता बतलायी है। कामान्दक ने यह भी प्रतिपादित किया है कि आन्वीक्षिकी इत्यादि चारों विद्याओं से राजा अपनी रक्षा करे साथ ही उन विद्याओं की भी रक्षा करे तभी वह चतुर्वर्ग का प्रणेता कहा जा सकता है।

कामन्दकीय नीतिसार के तृतीय सर्ग का प्रारम्भ राजा के लिये दण्य की अपरिहार्यता के वर्णन से हुआ है। तदुपरान्त सज्जनों के दया–दाक्षिण्यादि गुणों का वर्णन करके राजा में अपनें धर्म से विचलित नही होने के उददे्श्य से उन गुणों की वांछनीयता प्रतिपादित की गयी है। दया को धर्म का स्वरूप बतातें हुये कामन्दक ने राजा को कृपणों एंव दुखी जनों के प्रति दयालु बनने का उपदेश दिया है। राजा को क्रूरवाणी का यथासम्भव परित्याग कर देना चाहिये क्योंकि क्रूरवाणी सबको उद्विग्न कर देती है। कामन्दक ने मानवीय व्यवहारों का उपदेश प्रदान करते हुये परनिन्दा का परित्याग, स्वधर्म के अनुपालन, मधुर वचनों के प्रयोग, निष्कपट मित्रता, सामर्थ्य के अनुसार दान, सहिष्णुता एंव सच्चरित्रता को मानव के लिये अनिवार्य बतलाया है। नम्रता को सब गुणों में उत्तम प्रतिष्ठापित करते हुये राजा को नम्र, प्रिय, सदाचारी एंव दयालु रूप में होने के निर्देश के साथ कामन्दक ने तृतीय सर्ग की समाप्ति की है।

कामन्दकीय नीतिसर्ग के चौथे सर्ग में राज्य के साप्तांगों का प्रतिपादन मुख्य वर्ण्य–विषय के रूप में उपस्थित हुआ है। सर्ग के प्रारम्भ में राज्य के साप्तांगों का उददेश्यात्मक कथन यह बताया है कि इन सातों अगों में से किसी भी एक में विकार होने पर सम्पूर्ण राज्य की स्थिति विरूद्ध हो जाती है।

नीतिसार का पंचम सर्ग राजा एंव उसके आश्रित अनुजीवि पुरूषों के सम्बन्धों का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत करता है। सर्ग के प्रारम्भ में अनुजीवियों के लिये राजा को सेव्य बतलाया है। अतः राजा के अधीनस्थ अधिकारी जो की अनुजीवि है, निश्चय ही राजा के प्रति उत्तरदायी होने चाहिये। अनुजीवि के लिये आत्मवान् अविकारी, चतुर एंव निश्चयवान् होना आवश्यक बतलाया है।

कामन्दकीय नीतिसार के छठे सर्ग में प्रजा की रक्षा एंव राजा द्वारा स्वयं की रक्षा मुख्य वर्ण्य के रूप में उपस्थापित हुई है। कामन्दक ने राष्ट्र को राजा का बाह्य शरीर प्रतिपादित किया है अतः जिस प्रकार शरीर के अभाव में प्राणी का जीवन असम्भव होता है उसी प्रकार राष्ट्र के अभाव में राजा की कल्पना निरर्थक है। इस दृष्टिकोण को आधार बनाकर यह कहा गया है कि सभी प्रकार के प्रयत्नों से राजा राष्ट्र की रक्षा करे।

कामन्दकीय नीतिसार के सप्तम सर्ग का मुख्य वर्ण्य राजा एंव प्रजा के सम्बन्धों का निरूपण करना है। इस प्रकार प्रसंग में राजपुत्रों से सम्बन्धित एंव राजा की आत्मरक्षा से सम्बन्धित तथ्यों का भी वर्णन हुआ है। कामन्दक ने राजा एंव प्रजा के कल्याण के लिये राजपुत्रों की रक्षा का प्रावधान तो किया ही है, इसके साथ उनको नियन्त्रित रखने के हेतुओं का प्रकारान्तर से निर्देश भी किया है राज्यकी रक्षा में राजपुत्रों का मदोन्मत्त होना बाधक माना गया है। अन्त में कामन्दक ने राजा को निरन्तर नीति से जागने का उपदेश किया है क्योकि जब राजा नीति से जाग्रत रहता है, तभी प्रजा सुख से सो पाती है।

नीतिसार के अष्टम सर्ग में राजमण्डल का विवेचन प्रमुख वर्ण के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस सन्दर्भ में यह कहा गया है कि राजा सदैव विशुद्ध मण्डल में विचरण करे क्योकि वी सम्पूर्ण मण्डल का स्तम्भ होता है तथा विजीगीषु होता है। राजा की चञ्चधा प्रकृति का उल्लेख करते हुये कामन्दक ने मित्र एंव स्वयं राजा को भी प्रकृति रूप मानकर सप्त प्राकृतिक राज्य की कल्पना की है तथा बार्हस्पत्य मतानुसार उसे शास्त्र सम्मत स्वीकार किया है।

कामन्दकीय नीतिसार के नवम सर्ग प्राचीन राजनीति में प्रतिपादित षाड्गुण्य सिद्धान्त के अंगभूत प्रथम गुण सन्धि की विवेचना प्रस्तुत करता है। आपत्तिकाल में सन्धि को सर्वश्रेष्ठ उपाय बतलाया गया है। सर्ग के प्रारम्भ में कामन्दक ने 16 प्रकार की सन्धियों का उल्लेख किया है तथा 20 प्रकार के पुरूषों का निरूपण कर यह बताया है कि उनके साथ कदापि सन्धि न करे।

नीतिसार के दशम सर्ग में विग्रह नामक दूसरे गुण के विषय में अपेक्षित जानकारी प्रदान की गई है। विग्रह किस स्थिति में होता है इसका निरूपण करतें हुये सर्गारम्भ में यह बतलाया गया है कि क्रोधी राजाओं में परस्पर अपकार की स्थिति होने पर विग्रह की स्थिति होती है। देश काल तथा वातावरण का

विचार कर जिसने युद्व के औचित्य को समझा हो, जो विशाल सेना से युक्त हो ऐसे राजा को विग्रह करना चाहिये । कामन्दक ने विग्रह शान्ति के लिये उपायों का भी वर्णन किया है।

कामन्दकीय नीतिसार के ग्यारहवें सर्ग में यान तथा विजयाभियान नामक तीसरे गुण की विवेचना के अन्तर्गत मन्त्र विकल्प का प्रतिपादन मुख्य वर्ण्य के रूप में प्रस्तुत किया है। विजय के लिये राजा द्वारा किये जाने वाले अभियान या यात्रा को यान कहा गया है। कामन्दक ने सर्वप्रथम पॉच प्रकार के यानों का उल्लेख किया है जैसे विग्रह यान, संदाय यान, संभूय गमन, प्रसंग यान, उपेक्षा यान।

नीतिसार के द्वादश–सर्ग में दूतकर्म–प्रचार तथा चर विकल्प का प्रतिपादन हुआ है। सर्गारम्भ में कामन्दक ने ये निर्दे दिया है कि दूतकार्य हेतू कुशल दूत को उपयोग किया जाये। दूत की मुख्य विशेषतायें ये बताई गयी है िकवह चतुर हो, पर्याप्त स्मरण शक्तिवाला हो, विशिष्ट वक्ता हो, शस्त्र एंव शास्त्र में निपुण हो तथा अपने कर्म के प्रति सचेत रहने वाला हो ।

कामन्दकीय नीतिसार का तेरहवॉ सर्ग प्रकृति निरूपण का प्रधान विषयके रूप में उपस्थापन करता है। प्रकृति का तात्पर्य प्रजा से है तथा स्वामी से लेकर मित्र पर्यन्त प्रकृति मण्डल माना गया है। स्वामी के रूप में राजा के दैनिक कर्तव्यों के परिपालन के निमित्त कुछ महत्वपूर्ण निर्देश सर्गारम्भ में प्रस्तुत किये है।

नीतिसार के चौदहवे सर्ग में प्रधान रूप से राजा के सात व्यसनों का वर्णन किया गया है। सर्गारम्भ में राज्य एंव राजा के सम्बन्ध को बतलाते हुये यह कहा गया है कि राजा का व्यसन राज्य के व्यसन की अपेक्षा गुरूता को लिये होता है। चूंकि राज्य के व्यसनों को दूर करने में एकमात्र राजा ही सक्षम होता है। अतः राजा को व्यसनों से रहित होना नितान्त अनिवार्य है।

कामन्दकीय नीतिसार के पन्द्रहवें सर्ग में यात्राभियोग दर्शन को मुख्य वर्ण के रूप में प्रस्तुत करते हुये बाह्य एंव आन्तरिक निमित्तों के साथ कई विचारणीय बातों का उल्लेख हुआ है।

नीतिसार के सोलहवें सर्ग में स्कन्धावार अर्थात सेना के शिविर के विषय पर्याप्त जानकारी प्रदान की गई है।

कामन्दकीय नीतिसार के सत्रहवें सर्ग में मुख्यतः सामादि उपायों के प्रयोग की जानकारीप्रदान की गई। कामन्दक लिखते है कि अपने सत्व के भाग्य की अनुकूलता का तथा कर्तव्यता अकर्तव्यता का निर्णय करने के उपरान्त ही सामादि उपायों का प्रयोग किया जा सकता है।

नीतिसार के अठारहवें सर्ग में सेनाबल, सेनापति के कार्य, प्रयोग एंव युद्व सम्बन्धी विषयों का विस्तृत प्रतिपादन किया है।

कामन्दकीय नीतिसार के उन्नीसवें सर्ग में यान, कल्पना, व्यूह–कल्पना आदि का विषय मुख्य रूप से प्रतिपादित हुआ है।

कामन्दक नीतिशास्त्र के उल्लेखनीय आचार्य है। नीतिसार में उन्नीस सर्ग प्राप्त होते है। प्राचीन भारत के धर्मसापेक्ष राज्य शासन के सभी सम्बद्ध महत्वपूर्ण तथ्यों का सम्यक निरूपण इन उन्नीस सर्गो में हुआ है।

सन्दर्भ

1. श्रीकृष्णदास, श्री वैकेटेश्वर, कामन्दकीय नीतिसार, प्रेस बम्बई, प्रथम संस्करण।
2. आनंदाश्रम संस्कृत ग्रन्थावलिः,कामन्दकीय नीतिसारः प्रथमों भाग, आनन्द आश्रम, पूना, **2001**
3. Manmatha Nath Dutt, Kamandakiya Nitisara The Element of Polity, Elyuim press Calcutta, **1896.**
4. T. Ganpati Sastri Sankracarya, Nitisarah, **2011**
5. http://enwikipedia.org/wiki/Neeti_Sara Accessed on- **18-09-2017**
6. The Nitisara, Raja Rajendra Lala Mitra, Asiatic Society, Kolkata,**2008**
7. http://hi.wikipedia.org/wiki/dkeUndh;_uhfrlkjAccessed on – **18-09-2017**
8. http://hi.wikipedia.org/wiki/अर्थशास्त्र (ग्रन्थ) Accessed on – **19-09-2017**
9. मणिशंकर प्रसाद, कौटिल्य के राजनीतिक एंव सामाजिक विचार, मोतीदास वनारसीदास पब्लिशर्स चेन्नई, **1998**